अपार करुणा

स्वामी कृपानन्द द्वारा लिखित

एक दिन बाबा मुक्तानन्द शक्तिपात ध्यान-शिविर के समापन के बाद शाम को देर से अपने कमरे में लौटे थे। उस दौरान वे अपनी तीसरी विश्वयात्रा पर थे और ऑस्ट्रेलिया के मॅलबर्न शहर स्थित सिद्धयोग आश्रम में रह रहे थे। मैं बाबा जी के 'नमस्ते कक्ष' में कुछ काम कर रही थी कि तभी दरवाज़े पर खटखटाने की आवाज़ हुई। 'नमस्ते कक्ष' वह कक्ष था जहाँ बाबा जी अकसर दर्शनार्थियों से मिला करते थे। मैंने दरवाज़ा खोला तो देखा कि एक प्यारी-सी कैथलिक नन [इसाई तपस्विनी] दरवाज़े पर खड़ी हैं।

"स्वामी मुक्तानन्द यहाँ हैं?" उन्होंने मधुरता से पूछा। मैंने उन्हें समझाया कि बाबा जी तो जा चुके हैं और वे अब किसी से नहीं मिल रहे हैं। मेरे ऐसा कहने पर वे निराश-सी दिखाई दीं और उन्होंने कहा, "ओह, कृपया मेरी मदद कीजिए, मैं अपने मठ से सत्तर मील की यात्रा करके यहाँ आई हूँ। उनके दर्शन किए बिना मैं वापस नहीं जाना चाहती।" यह सुनकर, मैंने बाबा जी के सेवक को ढूँढ़ा और उन्हें इन कैथलिक नन के बारे में बताया। वे सेवक तुरन्त बाबा जी के कमरे में गए।

कुछ मिनट बाद बाबा जी बाहर आए और मुझसे कहा कि मैं उन नन को बाबा जी के 'नमस्ते कक्ष' ले आऊँ। वे अपनी कुर्सी पर बैठे और बड़ी कोमलता से उन्होंने उन नन को अपने समीप आने के लिए इशारा किया। वे नन रोने लगीं और बाबा जी के चरणों में गिर पड़ीं। उन्होंने बाबा जी को बताया कि उन्होंने टी. वी. पर समाचार में बाबा जी का चेहरा देखा था और तब से उन्हें कुछ हो गया है। वे सहज ही ध्यान में उतरने लगी थीं और उन्हें अपने धर्म-शास्त्रों में बताई गई सच्चाइयों की प्रत्यक्ष अनुभूतियाँ होने लगीं थीं, जिनका अध्ययन उन्होंने अपनी युवावस्था के दौरान अपने धर्म की शिक्षा ग्रहण करते हुए किया था। अब तक उन्होंने इन सच्चाइयों को केवल बौद्धिक रूप से ही समझा था। और आख़िरकार अब, उन्हें उन सच्चाइयों के सार का अर्थ समझ में आने लगा था।

बाबा जी ने उनके आँसू पोंछे और अत्यन्त प्रेम व करुणा से उनके गालों को सहलाया। “बहुत अच्छा!” ऐसा धीरे-से कहकर उन्होंने मुझसे उन नन को अपनी पुस्तक ‘कुण्डलिनी : जीवन का रहस्य’ देने को कहा और यह भी कहा कि इसके पहले कि वे नन अपने मठ के लिए प्रस्थान करें, मैं उन्हें भोजन अवश्य कराऊँ। फिर बाबा जी अपने कमरे में लौट गए।

© २०२४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।